

PARIS, 29th November, 1982

प्रिय सचिदा -

तुम्हारे दो पत्र मिले थे। वन प्रदर्शनी में आगे अनेकाल आलम के काम में व्यस्त हो गईं। अभी तुम्हारा तीसरा वन पत्र अनेकाल गैलरी की प्रदर्शनी के निमंत्रण के साथ मिल रहा है। दो शब्द मिलाये थे और अपनी शुभकामनाएं भेज रही हैं कि समय पा हो वह पत्र तुम्हें मिल सके। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें पूरी कामयाबी मिलेगी।

तुम्हारे पिछले पत्रों से समझा पाया (दुशी हुई)। श्रीमती (जा) ने भी तुम्हारा एक फोटो जो रही और वाक्यों के साथ लिया था भिजाया। आगे प्रसन्ता हुई first day cover और बिंदु टिकि पाया। जो निच पत्र दिये गये, और फिर एक वा और देश में फैली गै, भारत-संगोह लन्दन के अने वन के उपयुक्त स्थान दिया गया - यह जल का, देव की बड़ी शुद्ध-शान्ति का अनुभव का है। यह वन अजीब सा ही है, कि सारा भुजा गीला भाला नहीं। वन आ सफा ओपाल, न तो सफा और सफाई, न ही लन्दन वन अपने काम में ही लगा रहा, जो एकता से, अपनी क्षमता के अनुसार।

वन प्रदर्शनी सफल हो रही। इस भवन के काम बड़े कहिये हैं। आगे का आगे तो पूरी तैयारी के साथ आना, वहीं से बिना वगैरा लेका। ये तुम्हारे अने जग अनेकी के निमंत्रण भिजाया था। वे इस समय व्यस्त में थे। उनका अने पत्र आया है। रही वन लेयडन, हेनिग लासन, शि-गन वगैर आगे कई पत्र भिज दू दू से आये, फ्रांस से भी। आदमी है बाल आगे नीत व आ सके। हम वहां 6 दिन से रहे। अब 8 दिनांक आलम की 2 सेरेग्राफी के साथ अनेकाल ये साल की आनी प्रदर्शनी है।

पौंस जोर का काम कि से शुरू किया है। इसके बिना वन नहीं। नई सामाजिक भावने हैं, नये कार्यक्रम बन रहे हैं। जब आना हो सकेगा भाला नहीं। लगता है फिलहाल संदर्भ यही है। शक्तियों जाये - ये आशा है, यही उद्देश्य है।

"बगई" कैसी है, थोड़ा प्या देना । और मित्रों को गाद दिलावा ।
काली पन्डाल से। लम्बाका फूला । मैं आपका राज अरुंगा गिरा
रुद्ध किनें वाद लिये लेका । हम भी - जब भी हो सके लिकवा
और शो सजावा देना । हौं सत्य निष्काल का केमाल बोली भी
गंगा रुद्ध ५ सोरोवादी और एक ओर अक्वाटेन्ट - इनमे किंग
मिजाया है । शायद मिल गये होंगे । देख लेना ।

बहुत था और फिर मैं

रि. ॥